जाने कहाँ गए वो दिन...?

डॉ. संजीव सेन सिंह
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
पी.जी. कॉलेज, भुड़कुड़ा, गाज़ीपुर।

दोस्तों आप सभी को मेरा नमस्कार ... मेरा यह लेख पूर्णतः अनौपचारिक और मेरे व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है। दोस्तों मैं जिस पृष्ठभूमि से आता हूँ, वह ग्रामीण है। पहले और आज की जो ग्रामीण परिस्थितियाँ है उसमे गुणात्मक अंतर आ गया है। पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, नगरीकरण आदि परिवर्तन की प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप 21वीं सदी में जो परिवर्तन हुआ है, वो मुझे बहुत प्रभावित करता है, इन्हीं परिवर्तन के सन्दर्भ में मैं यहाँ बात कर रहा हूँ।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है, जैसा की यूनानी दार्शनिक हेराक्लित्ज कहते हैं कि संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तन के दौर में है। हमारा समाज भी परिवर्तित हुआ है। कुछ परिवर्तन स्वागत योग्य होते हैं जबकि कुछ परिवर्तन कष्ट देने वाले। मैं उन्ही परिवर्तनों की बात करूंगा जिसने हमारे ग्रामीण समाज की आधारभूत संस्कृति को ही बदल दिया, यह परिवर्तन ग्रामीण समाज एवं संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रो में दिखाई देता है। मैं परिवार विशेषकर संयुक्त परिवार में जो परिवर्तन हुआ है उसकी बात करूंगा।

परिवार में अब वह निकटता नहीं रही जो पहले थी पहले परिवार में बच्चा अपने मां बाप से ज्यादा चाचा, चाची, दादा, दादी और बड़े भाई-बहनों के निकट रहता था; छोटा भाई अपने बड़े भाई और भाभी को मां बाप का दर्जा देता था; इनमें एक अत्यंत उच्च श्रेणी का भावनात्मक लगाव पाया जाता था लेकिन आज...?

शादी के बाद जो भी उपहार मिलता था उस पर सभी का हक़ होता था अगर भाई के शादी के बाद बहन की शादी पड़ती थी तो परिवार पर आर्थिक बोझ न पड़े इसके लिए भाई के शादी में मिले समस्त उपहारों को बहनों को दे दिया जाता था, इसमें किसी को अपने उपहार के प्रति तनिक भी आसक्ति नहीं रहती थी, विशेषकर नवविवाहित महिला को। यह सदस्यों की परिवार के प्रति त्याग और समर्पण की भावना को दर्शाता है लेकिन आज...?

पहले का परिवार संकट में बीमा हुआ करता था कठिन से कठिन परिस्थितियों, बड़ी से बड़ी समस्यायों का समाधान लोग साथ मिल-बैठ कर निकाल लिया करते थे, शायद इसीलिए उस समय बीमा कंपनियां सफल नहीं होती थी क्योकि परिवार ही बीमा कंपनी हुआ करती थी लेकिन आज...?

पड़ोस में जो दादा जी रहते थे पढ़ाई-लिखाई से सम्बंधित प्रश्न पूछते, समझाते और इस क्रम में कमियां पाने पर डांटते फटकारते भी थे और साथ ही प्यार–दुलार भी उसी अनुपात में करते थे। शायद इसीलिए समाज में बाल अपराध जैसी घटनायें नगण्य होती थी क्योंकि बच्चों पर परिवार के साथ-साथ पड़ोस की भी निगरानी निरंतर बनी रहती थी लेकिन आज...?

चाचा जी या घर का कोई अन्य सदस्य जब भी परदेश से घर आते थे तो परिवार के सदस्यों के लिए तरह-तरह के सामान जैसे; मिठाइयां, कपड़े, खिलौने और अन्य ज़रूरत की चीज़े लाते थे, जिसको पाकर परिवार के सदस्य खासकर बच्चे खुशी से फूले नहीं समाते थे, उनके मन में एक अलग तरह का उमंग एवं उत्साह देखने को मिलता था। भतीजा चाचा की सेवा में लगा रहता था और उसको परदेश के बारे में जानने में बहुत रुचि रहती थी मानो उसके लिए चाचा ही सब कुछ होते थे लेकिन आज...?

मोबाइल से दूर सभी लोग साथ बैठते, बातचीत करते, हंसी-मजाक का माहौल निरंतर बना रहता था। उन बातो में इतना आनंद था की समय कब बीत जाता, पता ही नहीं चलता था। मनोरंजन के लिए किसी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस

की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। कुछ व्यक्ति ऐसे होते थे जो अपनी कॉमेडी से लोगों को खूब हंसाते थे, शायद यही कारण था की डिप्रेशन या तनाव क्या होता लोगों को दूर–दूर तक पता ही नहीं था लेकिन आज...?

परिवार या पड़ोस में कोई ना कोई एक जानकर व्यक्ति खास तौर पर वृद्ध, जिनके पास हर समस्या का समाधान (गूगल बाबा) हुआ करता था, लोग उनसे सलाह लेने के लिए जाते थे और उनसे समुचित समाधान भी पाते थे। परिवार में बड़े बुजुर्गों को विशेष आदर-सम्मान दिया जाता था। उनके अनुभवों का लाभ लिया जाता था। सभी प्रकार के निर्णय बड़े-बुजुर्ग ही लेते थे और उनके आदेशों का सदस्यों द्वारा अक्षरशः पालन किया जाता था। शायद इसीलिए उस समय वृद्धाश्रम मौजूद नहीं थे। किसी बच्चे के माँ-बाप की मृत्यु हो जाने या किसी अन्य अनहोनी की दशा में उसके पालन पोषण की सम्पूर्ण जिम्मेदारी परिवार के सभी सदस्य अपने ऊपर ले लेते थे। शायद इसीलिए उस समय अनाथालय नहीं हुआ करते थे लेकिन आज...?

नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से भावनात्मक रूप से जुड़ी रहती थी। बच्चे अपने दादा–दादी, नाना–नानी से कहानियाँ सुनते और उनके अतीत को जानने में विशेष रुचि रखते थे। इससे नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच भावनात्मक जुड़ाव बना रहता था। इससे वृद्ध व्यक्तियों का समय आसानी से व्यतीत हो जाता था और बुढ़ापा उनके लिए बोझ नहीं लगता था। वे एकांतवास से भी दूर रहते थे। फलस्वरूप नई एवं पुरानी पीढ़ी में अंतर-पीढीगत संघर्ष देखने को नहीं मिलता था लेकिन आज...?

उस समय टेलीविजन सभी के घर नहीं हुआ करता था, इसलिए धारावाहिक या कोई फिल्म आती थी तो परिवार-पड़ोस सभी साथ मिल-बैठकर देखते थे। कुछ पसंदीदा धारावाहिक सिर्फ रविवार को ही आते थे जिसके लिए सभी लोग पूरे सप्ताह इंतजार करते थे, उस इंतजार का अलग ही आनंद था। भावनात्मक दृश्य आने पर लोगों के आँखों में आंसू आना ह्रदय को द्रवित कर देता था, एक अलग प्रकार की सामूहिक भावनायें देखने को मिलती थी लेकिन आज...?

दादी-नानी अपने आँचल के एक कोने में कुछ पैसे गाँठ में बांधकर हमेशा रखती थी। हमारे लिए वो किसी एटीएम से कम नहीं था। हम लोगों के अत्यधिक जिद करने या विदाई के समय आँचल में बंधी मुड़ी हुई नोट जब हांथ में आती थी तो ऐसा लगता था कि मानो दुनिया का सबसे बड़ा खजाना मिल गया है, जिससे पूरे संसार को खरीदा जा सकता है। हमारे लिए वह सिर्फ पैसा ही नहीं था बल्कि एक ऐसी भावना थी जो आज भी हमको बांधी हुई है; लेकिन आज...?

कहने को तो बहुत सारी बातें हैं, जिनको कुछ पन्नो में बयां करना मुश्किल है इसीलिए परिवर्तन के कुछ ही आयामों को रेखांकित कर पाया हूँ। आशा है कि मेरे द्वारा व्यक्त भावनाओं को आप भी महसूस कर पाएंगे। अंत में मैं बस यही कहूँगा कि आज हम लोगों को चाहे जितनी सुख-सुविधाएं, ऐशो-आराम की चीजें क्यों न मिल जायें लेकिन उन पुरानी यादों का स्थान नहीं ले सकती जिसको हमने जिया है, इसीलिए मैं बरबस ही पार्श्व गायक मुकेश कुमार द्वारा गाये गीत को हमेशा गुनगुनाता हूँ....'जाने कहा गए वो दिन'...?

***

Same line about are teachers

- आरती गोंड़

बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

मैंर्ुम्पि के बारे में जितना कहूँ कम है...
आज जो भी हूँ, सब उन्हीं के दम पे है...
कामयाबी भले ही मुझे कुछ कम है...
परन्तु उनका साथ मेरे साथ हरदम है
अब हमें ना ही किसी का गम है,
क्योंकि जो भी है, उनके आगे कम है
मैंर्ुम्पि के बारे में जितना कहूँ कम है।।
कुछ कठिनाइयों को भी उनके आगे
आने में डर है...
क्योंकि संसार की शक्ति उनके पास हरदम है
मैंर्ुम्पि के बारे में जितना कहूँ कम है।।

***